महाकाव्य का उद्भव और विकास -

साहित्य विधा का उद्भव वैदिक सूक्तों से ही मिलता है जिनमें स्तुतिपरक नाराशंसियों, दान-स्तुतियों, संवाद-सूक्तों तथा देवताओं के वर्णन का महत्त्व महाकाव्यात्मक शैली के लिए है। रामायण और महाभारत जैसे आर्ष-काव्य इस साहित्य-विधा के भास्कर हैं जिन्होंने परवर्ती काव्यों को विषय-वस्तु, वर्णन, शैली तथा भाषा-शैली भी दी है। फिर भी संस्कृत-काव्यों की व्यवस्था एक सम्पूर्ण कलात्मक कृति के रूप में है।

कालिदास, अश्वघोष आदि कवि अवश्य ही रामायण से प्रभावित हुए किन्तु वाल्मीकि की विशद व्याख्या की अपेक्षा छोटे, प्रभावशाली एवं चमत्कारी निर्देशों में ही काव्य की सफलता प्रतीत हुई। वाल्मीकि से कालिदास तक आने में काव्य कला को कई शताब्दियाँ लगीं। इस बीच अनेक कवि हुए, जिनकी काव्य-कृतियाँ भारतीय परिवेश की उष्मा में शनैः-शनैः विलीन हो गयीं।

ईसा पूर्व की शताब्दियों में ही पाणिनि, वररुचि व्यडि तथा पतञ्जलि वैयाकरण होने के अतिरिक्त अपने काव्य 'पाताल विजय' तथा 'जाम्बवती विजय' के कारण चर्चा में रहे (ये पाणिनि के महाकाव्य हैं।)

वररुचि के नाम से सुभाषित पद्य 'सदुक्तिकर्णामृत', 'सुभाषितावली' तथा शार्ङ्गधरपद्धति जैसे संग्रह-ग्रन्थों में संकलित हैं। पतञ्जलि ने महाभाष्य में काव्य-सम्पदा का उल्लेख किया है जिससे १५० ई० पू० में वर्तमान काव्य-रचना की स्थिति का ज्ञान होता है।

वस्तुतः महाकाव्य के लक्षणों में कुछ आवश्यक या महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें कथानक, नायक और रस सम्बद्ध बातें हैं। कथानक की दृष्टि से महाकाव्य किसी प्रसिद्ध या ऐतिहासिक घटना पर आश्रित है, काल्पनिक इतिवृत्त का अवकाश इनमें नहीं होता है। आधुनिक युग के महाकाव्य भी इसी नियम पर चलते हैं। विश्वनाथ का कथन है - 'इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्'।

नायक के विषय में विश्वनाथ ने तीन विकल्प दिए हैं - किसी देवता का नायक होना, 'धीरोदात्त' के गुणों से युक्त अच्छे वंश का क्षत्रिय नायक हो अथवा एक वंश में अनेक राजाओं नायक होें।

रस की दृष्टि से शृंगार, वीर अथवा शान्त रस को प्रधान रस, अन्य सभी रसों को अंगों के रूप में रखा जाना चाहिए।

'सर्गबन्धः महाकाव्यं तस्य लक्षणं आशीर्नमस्क्रियं तद् युक्तं इतिहास कथोद्भूतं...' सर्ग में विभक्त होता है, आरंभ में नमस्कार, आशीर्वचन या सीधा वस्तु निर्देश होता है, कथावस्तु में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का वर्णन हो, उसमें से किसी एक फल की प्राप्ति अन्त में दिखाई जाती है। ग्रन्थ का नाम कवि, कथानक, नायक या प्रतिनायक के नाम पर रखा जाता है। वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष आदि कवि इसी परम्परा के प्रवर्तक माने जाते हैं।

कालिदास - संस्कृत - साहित्य में कालिदास के दो प्रसिद्ध महाकाव्यों का योगदान है और जिनको प्रभूत (बहुत ज्यादा, प्रचुर) प्रख्याति मिली।

1. कुमारसंभव - सत्रह सर्गों में निबद्ध इस महाकाव्य में शिव - पार्वती का विवाह, कुमार कार्त्तिकेय का जन्म और तारकासुर के वध की कथा वर्णित है। इसके प्रथम आठ सर्ग ही कवि रचित जान पड़ते हैं एवं मल्लिनाथ की टीका वस्तुतः सात सर्गों तक ही है। किंवदंती है कि कुमारसंभव के अष्टम सर्ग की रचना के अनन्तर शिव के शाप से कालिदास रुग्ण हो गए।

वास्तविकता यह है कि कालिदास ने कुमार कार्त्तिकेय के जन्म की परिस्थितियों का ही निरूपण इस महाकाव्य में किया है। कुमार के वास्तविक जन्म का विवरण देना उनका लक्ष्य नहीं था; 'संभव' शब्द संभावना की ही ध्वनि देता है, वास्तविक जन्म को प्रकाशित नहीं करता।

इस महाकाव्य में कालिदास ने अपनी सौन्दर्य-भावना का पूरा प्रकर्ष दिखाया है।

महाकाव्य - Contd

B.A I St + III yr.
Uma Bakshi
Dept. of Skt.

Scanned with CamScanner